PHILOSOPHY

PG III Sem. (Indian Logic)

Dr. S.K. Singh
Mob-9431449951

अनुमान का घटक 'हेतु' अथवा 'लिंग'

→ अनुमान का तीसरा घटक 'हेतु' या 'लिंग' है। अनुमान में इसका विशिष्ट महत्व है। इसकी यथार्थता अथवा अयथार्थता पर ही अनुमान की वैधता-अवैधता निर्भर है।

→ व्याप्ति के कारण किसी स्थान विशेष में साध्य की सत्ता प्रमाणित करने वाला साधन हेतु है। यथा - पर्वत पर धुँआ देखकर पर्वत पर अग्नि की उत्पत्ति अथवा अनुमान किया जाता है। अतः इस अनुमान में पर्वत पर धूम्र का दर्शन ही अनुमान का हेतु है।

→ कुमारिल भट्ट के अनुसार जिसमें साध्य की व्याप्ति रहती है उसे 'हेतु' कहते हैं। सौत्र स्थान में लिंग या हेतु को व्याप्य के रूप में परिभाषित किया गया है। यथा - उक्त उदाहरण में अग्नि व्यापक है और धूम्र व्याप्य। अग्नि का व्याप्य होने के कारण ही धूम्र अग्नि को हेतु या लिंग (या चिह्न) है।

→ बौद्ध आचार्य धर्मकीर्ति के अनुसार 'जो पक्ष का धर्म हो और उसके एकदेश में व्याप्य रहे, उसे हेतु कहते हैं।' आचार्य मनोरथ नन्दी ने इसकी व्याख्या करते हुये हेतु के अथवा लिंग के दो लक्षण बतलाये हैं - (i) हेतु पक्ष का धर्म है, और (ii) हेतु पक्ष के अन्य अंश के साथ व्याप्त रहता है।

इन दो बिन्दुओं की व्याख्या से निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं -

Scanned with CamScanner

(i) <u>हेतु पक्ष का धर्म है</u> — हेतु के इस लक्षण की व्याख्या करते हुये आचार्य मनोरथनन्दी ने कहा है कि पक्ष के दो अंश होते हैं — धर्म और धर्मी। जिस गुण या लक्षण को प्रदर्शित करने से अनुमेय वस्तु की सिद्धि होती है उसे 'धर्म' कहते हैं; तथा जो अनुमेय वस्तु इस धर्म को धारण करता है वह धर्मी कहलाता है। पक्ष धर्म और धर्मी दोनों को धारण करता है। इसमें धूम्र धर्म है, अतः पक्ष (पर्वत) के एकदेश में व्याप्त है (यथा - पर्वत पर धूम्र है)। अतः धूम्र ही धर्मी होने के नाते लिंग या हेतु है।

(ii) <u>हेतु पक्ष के अन्य अंश साध्य के साथ व्याप्त रहता है</u> — हेतु अथवा लिंग के अन्य लक्षण की चर्चा करते हुये आचार्य का कहना है कि हेतु के लिये पक्ष का धर्म होना ही पर्याप्त नहीं है प्रत्युत पक्ष के अंश साध्य के साथ उसे व्याप्त भी होना चाहिये। इस प्रकार पक्ष के दो अंश हैं - धर्म तथा धर्मी, यथा - उपर्युक्त अनुमान में पर्वत (पक्ष) के दो अंश हैं - धूम्र तथा अग्नि। इनमें धूम्र ही हेतु अथवा लिंग है, क्योंकि

(a) यह पक्ष में धर्मरूप विद्यमान है।

(b) यह पक्ष (पर्वत) के अंश, साध्य (यथा अग्नि) के साथ व्याप्त है।

→ बौद्ध आचार्य ~~दिङ्नाग~~ दिङ्नाग तथा धर्मकीर्ति ने हेतु को त्रिरूप बतलाया है - पक्षधर्मत्व, सपक्षसत्व और असपक्षासत्व (अ+सपक्ष+असत्व)।

→ इस प्रकार हेतु अथवा लिंग अनुमान का घटकरूप है जिससे व्याप्त साध्य (लिंगी) का अनुमान पक्ष में किया जाता है।

Scanned with CamScanner